खेल अभी पूरा हो, फिर से रिपीट होने का है। दुनिया की तो गत और मत; गत तो है नहीं, फिर कहेंगे दुनिया की दुर्गति और असत् मत। श्रीमत फिर हो गया आसुरी मत। ये अभी तो बिचारे जानते नहीं हैं। रास्ता तो यही बताया है, खाली लब्ज़ नए नहीं बताते हैं बच्चों को कि यह मन्मनाभव का अर्थ रूहानी यात्रा है, मद्याजीभव का अर्थ रूहानी वर्सा है; क्योंकि मनुष्य कोई रूहानी वर्सा तो माँगते नहीं हैं ना। वो तो जिस्मानी वर्सा माँगते हैं। बाबा ने दिया, ऐसे कहेंगे ना। भले है सभी आत्मा की एक्टीविटी शरीर द्वारा। ये आत्मा है, अब कहती है कि हम अपना वर्सा बच्चे को देता हूँ। ये आत्मा मेरा संतान है भिन्न। तो ये किसको भी आएगा नहीं ऐसे समझने और करने से। यह बाप तो समझा सकते हैं। बाप को तो प्रैक्टिस है 'बच्चे–2' कहना और 'बच्चे' कहकर समझाना। और तो कोई में प्रैक्टिस ही नहीं हो सकती है, न ही कोई भी प्रैक्टिस चल सकती है। देखो, बाबा उस दिन ये इसके ऊपर बैठ करके समझाने लगा, बाबा को खुद ही नहीं भुचता था यानी आता था तो मैं कुछ ठीक से समझाता हूँ। वो दिल नहीं लगती थी। इसको प्रैक्टिस ही नहीं थी। हाँ, ये प्रैक्टिस बाप को ही है बच्चों को बैठ करके समझाना। दुनिया तो बिचारी नहीं जानती है मनुष्य या कोई..। वो तो बाप (के लिए) ही कहते हैं कि सर्वव्यापी है। तो फिर सवाल ही नहीं उठता है कि ये कोई शिक्षक है या गुरू भी है। ये सवाल भी नहीं उठ सकता है। तो इसी को कहा जाता है कितने जंगल में जाकर पड़ा है। ये बुद्धि कैसी मूँझी हुई पड़ी हुई है। तो बाप आ करके कल्प–2 समझाते हैं। देखो, अभी तो तुम समझ गए ना– मनुष्य कितने मूँझे हुए हैं, कितने तुम मूँझे हुए थे। तुमको क्या पता था! अभी मनुष्य की कतार में आए हो। आगे तो जंगलियों के कतार में थे। यानी जंगल वाले भी तो बाप को नहीं जानते हैं ना। जनावर कोई जानते हैं क्या बाप को? तो उनमें और तुम्हारे में फर्क ही क्या! क्योंकि पुकारते तो सभी तुम्हीं हो बाप को। वो तो बिचारे नहीं जानते हैं, जनावर हैं। तुम मनुष्य हो करके भी जिसको पुकारो, जिसके देवताओं के पास जाओ–करो, कुछ भी नहीं जानते हैं। तभी तो कहते हैं ना– तुम भी जैसे जंगली ही बने। इसलिए नाम ही रखा हुआ है अंग्रेजी में फॉरेस्ट ऑफ थॉर्न्स, काँटों की सम्प्रदाय। अभी तुम बनी हो फूलों की सम्प्रदाय। बनती जाती हो। फूल कोई निकलते हैं तो फट फूल ही थोड़े ही निकलते हैं। नहीं, बहुत छोटी–सी कलियाँ निकलती हैं, आहिस्ते–2 करके। तो तुम भी काँटों से फूल। नाम तो है ना बरोबर– ये फॉरेस्ट ऑफ थॉर्न्स है, अंग्रेजी में कहते हैं। ये काँटे हैं और वो देवताई फूल है। गाया तो जाता है ना। अभी तुमको अच्छी तरह से समझ पड़ी है। तुम सुजाग हुए हो। नॉलेज मिली ना, तो तुम सुजाग हो नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार। तुमको सारा ये जैसे कहा जाता है नाटक की आदि,मध्य,अंत को यानी जो छोटा एक्टर होगा, वो तो है छोटा नाटक; परन्तु सभी एक्टर्स को जानते तो होंगे ना। उनके पार्ट को भी सभी जानते होंगे; परन्तु ये है ह्यूज़, बहुत बड़ा; इसलिए इनको थोड़े में जानना होता है। तो बाप भी थोड़े में ही आ करके बच्चों को समझाते हैं। युग भी समझाते हैं, प्रकृति का भी राज़ समझाते हैं और ये माया का भी राज़ समझाते हैं, सम्पत्ति का भी राज़ समझाते हैं और सहज समझाते हैं कि कोई भी कहो– अभी शिवबाबा से वर्सा मिलता है; क्योंकि शिवबाबा सतयुग का रचता है तो ज़रूर सतयुग का ही वर्सा देंगे। सतयुग में वर्सा तो है ही दैवी घराने का। गाया भी गया हुआ है कि मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। ये भी हाथ में है तुम बच्चों को। तो बहुत खुशी से किसको भी कह सकते हैं कि हम बेहद के बाप से ...वर्सा ले (रहे हैं)। बेहद का बाप शिवबाबा। बिल्कुल सहज है। वो हद के बाप (का) जो वर्सा है वो अभी पूरा होता है। वो जन्म ब जन्म हद का वर्सा अपने कर्मों (के) अनुसार मिलता है। यहाँ तो हमें बाबा ऐसे कर्म कराते हैं जो 21 जन्म का वर्सा.....। कर्म की बात वहाँ कुछ होती ही नहीं है। कोई बात ही नहीं चलती है। यहाँ दुःख और सुख है; इसलिए कर्म की बात। वहाँ है ही सुख, वहाँ कर्म की बात उठ ही न सके कुछ भी। यूँ भी किसको भी समझाएँगे, बरोबर सतयुग–त्रेता में स्वर्ग में मनुष्य थे तो स्वर्गवासी तो सुखी होगा और ज़रूर उनको वर्सा स्वर्ग का बाप से ही मिला होगा। अभी कब मिला? वो तो ज़रूर संगम पर ही मिला होगा कलहयुग–सतयुग के बीच में। संगम तो बहुत गाया हुआ है ना। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगमयुगे आता हूँ। युगे–2 तो नहीं आता हूँ। जबकि पावन दुनिया स्थापन करनी होती है

पतित से, तब आना पड़े। नहीं तो द्वापर के बाद तो कलहयुग आता है, पावन दुनिया तो नहीं आती है। पतित दुनिया होती है और याद करते हैं– पतित–पावन आओ! तो पतित दुनिया होती है कलहयुग में, पावन दुनिया सतयुग में। तुम्हारी बुद्धि में तो ये अच्छी तरह से बैठा हुआ है ना। कोई को भी ऐसे ही, अभी हम बाप से वर्सा लेते हैं। कौन–सा बाप से? निराकार बाप से। सिर्फ निराकार बाप को शरीर चाहिए। सो ब्रह्मा द्वारा। पतित तो सभी हैं, ब्रह्मा भी पतित है। ब्रह्मा कोई अपन को पावन तो कहलाते ही नहीं हैं। ब्रह्मा पावन बन रहे हैं जैसे चित्रों में है। वो पावन बन रहे हैं। हम भी सभी पावन बन रहे हैं। बनकर के मनुष्य से देवता बनाएगा तो मनुष्य को आकर देवता बनाएगा ना। तो ये मनुष्य है, सिर्फ ये ब्राह्मण कहलाते हैं; क्योंकि प्रजापिता ब्रह्मा के एडॉप्टेड चिल्ड्रेन हैं। प्रजापिता ब्रह्मा गायन भी तो है ना। बच्चों को ये भी बुद्धि में रहता है कि अभी नाटक पूरा होता है। अभी हमको वापस जाना है और फिर आना है। फिर ये भी जानते हैं कि सुख के संबंध में आना है, दुःख का बंधन तो पूरा होता है और ये भी समझना चाहिए, अगर थोड़ा भी समझा कि सतयुग में सुख के संबंध थे, दुःख का तो था ही नहीं और था भी एक ही धर्म। ये पहचान तो दी जाती है ना बहुत अच्छी। जब भारत स्वर्ग में था ; क्योंकि भारत तो अविनाशी खण्ड है। भारत जैसा महान पवित्र कोई था ही नहीं और फिर महान अपवित्र इन जैसा कोई और नहीं; क्योंकि बनना ही है। जो महान पावन था सो महान पतित बने हैं। भारत में ही ये याद करते रहते हैं– पतित–पावन आओ–2। ये अक्षर और कोई भी जगह में हैं नहीं। भले अंग्रेजी लोग कहते हैं लिबरेटर आओ; पर वो तो दुःख से कहते हैं (कि) आओ। हे हैविन के स्थापन करने वाले आओ, आकर हमको दुःखों से लिबरेट करो। वो जानते हैं कि स्वर्ग की स्थापना करने वाले हैं और उनका नाम भी रखा हुआ है लिबरेटर, दुःखों से लिबरेट करो और गाइड करो यानी अपने तरफ ले जाओ। ये तो यहाँ कहा जाता है पतित–पावन आओ, तभी ये समझाने में सहज होता है। भारत सो पावन, भारत (ही) पतित। बहुत अच्छी मूँझेली बातें हैं जो कहते भी हैं राम और रावण; परन्तु राम उनको भी कहते हैं। राम–2 सारा दिन कहते हैं, उनको उस समय में कोई राम और सीता थोड़े ही याद आते हैं। राम–2 तो कहते ही हैं निराकार को; परन्तु ये शास्त्रों में जो इतनी बातें निकल गई हैं, उसमें बिचारे मूँझे हुए हैं और उनको भक्तिमार्ग बिगर कुछ सूझता ही नहीं है बिल्कुल। (भक्ति)मार्ग में सब खतम हो जाते हैं। ये भोग की भी कुछ युक्तियाँ हैं, जो बाबा समझाते हैं, बुलाते हैं उनको तो और समझें कि देखो, कोई ने शरीर छोड़ दिया तो दूसरे को कहा जाता है (कि) भई देखो, शरीर के ऊपर कोई एतबार है? इसलिए जल्दी आकर अपना वर्सा ले लो। देखो, इसने गफलत की। खुद कहते हो मैं(ने) गफलत की, जो मैं(ने) अटेन्शन नहीं दिया। तो कोई को मालूम थोड़े ही पड़ता है काल कब खाएगा। अच्छा, बैठे–2 देखो, तुम(ने) अभी देखा शास्त्री का कैसे मज़ा हुआ। हम तो इस खेल को मज़ा कहेंगे ना। देखो, खेल में कैसे ऐसे मज़े होते हैं! बैठे–2 ये गया और फिर क्या करते हैं, देखो, मिट्टी उठा करके कितने चक्कर लगाते हैं। नदी में जाकर डालते हैं यानी वो जो उनकी हट्ठी है वो भी पावन हो जावे। आत्मा (ने) तो जाकर दूसरा शरीर लिया। पीछे बैठ करके मिट्टी किसमें भी डालो, क्या भी करो, वो क्या करेगा? वो तो निकला और जाकर शरीर धारण किया। ये पीछे मट्टी उठाएँगे, क्या करेंगे। वो कहाँ जाएँगे? स्वर्ग में जाएँगे। वो तो जाकर पहुँचा भी। मनुष्यों को बिचारों को इतना मालूम ही नहीं है। जिनको अच्छी तरह से नॉलेज का नशा है, वो अंदर में बहुत खुश रहता होगा; क्योंकि वेस्ट टाइम नहीं करता होगा। बुद्धि का योग लगाता ही रहता होगा बाप से। विलायत में भी योग का अर्थ, उसके ऊपर अपना वातावरण करना या एक/दो को सिखलाना। अभी तरीके तो बहुत हैं, अथाह हैं। इनको ये यात्रा का योग कौन सिखलाते होंगे? वो तो फिलॉसफी और स्प्रिच्युअलिज़्म ये अक्षर ही दो दूसरे हैं। वो स्प्रिच्युअल भी इसको ही कहते हैं जिसको फिलॉसफी कहा जाता है। उनको ये मालूम ही नहीं है कि स्प्रिच्युअल नॉलेज ज्ञान का सागर है। वो जो रूहानी नॉलेज देते हैं, तो रूहानी नॉलेज का अर्थ ही माना रूह, रूह को नॉलेज दें। ये फिलॉसफी है, उसमें तो ऐसा कभी कोई कहते ही नहीं हैं कि सुप्रीम रूह या कोई महात्मा रूह बैठकर कोई रूहों को समझाते हैं। वो तो है नहीं। उसको रूहानी नॉलेज कही नहीं जाए। वो तो जिस्मानी नॉलेज

है ना। ...मनुष्यों ने बैठ करके बनाई है ये सभी किताब और ये तो है स्प्रिच्युअल नॉलेज जो बैठकर अपने स्प्रिच्युअल चिल्ड्रन को ; ये तो किसको भी मालूम नहीं है, जब तलक कोई यहाँ से जा करके उनको समझावे कि बरोबर स्प्रिच्युअल नॉलेज ही गीता की नॉलेज है। ये कोई फिलॉसफी नहीं है। भगवान ने रूहों को बैठ करके समझाया है। उस गीता में लिखा है अर्जुन को बैठ करके कृष्ण ने समझाया। दोनों नाम देखो, वो आता है और हम कहते हैं– नहीं, हमारा सुप्रीम रूह सो हम आत्माओं को बैठकर पढ़ाते हैं। इसको कहा जाता है स्प्रिच्युअल नॉलेज माना रूहानी नॉलेज रूहों प्रति; क्योंकि रूह ही पतित बना है। अभी ये तो कोई बिचारा समझते नहीं हैं जब तलक कि यहाँ वाला कोई जावे और किसको अच्छे को पकड़े। ये संस्था असुल विलायत में थी। अभी फिर कोई महर्षि है कि क्या! किसमें? ऋषिकेश में तो धारणा है ना इन सभी सन्यासियों और भक्तों को और महात्माओं फलानों को तो ये समझते हैं कि ये हरिद्वार कोई बड़ा तीर्थ है। बाकी वास्तव में तो हरिद्वार है नहीं। ये हरिद्वार तो गाँव का नाम है। तो वहाँ उनको शेप ही दे दिया है ऐसे कि यहाँ से कोई जाते हैं– स्वर्गाश्रम, फिर लक्ष्मण झूला, फिर फलाना। है तो कुछ भी नहीं, बैठ करके नाम रखे हैं ऋषिकेश। ऋषि लोग रहते थे। बाकी हैं तो सभी तीर्थ में ये टुबके मारने वाले। मारते हैं ना, अंदर जा करके सिर्फ निकाल आते हैं बाहर। ये भी टुब्बी मारकर के फिर से निकाल देते हैं। अभी ज्ञान हुआ ना। आगे तो सब गंगा स्नान में जाते थे। जन्म–जन्मांतर किया होगा। अभी तो इसकी नॉलेज, फिलासाफी ही नहीं है। फिर कोई लिखा–पढ़ी करे, अपने पास अच्छा सेन्सीबुल जो सर्विस में है। कुछ तो कोई ने चिट्ठियाँ लिखी हैं। ...किसको चिट्ठी लिखी थी? मुट्ठी वो दिखलाया नहीं इनको। तो सुनावें। चिट्ठी लिखा है राधाकृष्ण को और पता नहीं दूसरा किसको किसके ऊपर लिखा था, देखें। अगर यहाँ से दिल्ली वालों को लिखेंगे ना तो कहाँ तक होगी, ये बिजनेस जब तलक बंद हो तब तलक होगी ये भी। तो कल उनको चिट्ठी लिख देते हैं कि वहाँ चिट्ठी देवे वहाँ के जो बड़े हैं, महर्षि हैं या उनके जो बड़े हैं। विलायत से भी बहुत आए हुए हैं। तो कॉपी निकाल करके वो जो भी हैं, इनमें नाम हैं कुछ अच्छे–2 या लिफाफे के ऊपर नाम डालकर वहाँ भी लिखकर किसको दे सकते हैं। बहुत हैं। कुछ तो नाम हैं। तो उनको ये समझा देवें कि फिलॉसफी अलग चीज़ है, ...स्प्रिच्युअल नॉलेज अलग है। स्प्रिच्युअल नॉलेज स्प्रिच्युअल फादर देते हैं अपने स्प्रिच्युअल चिल्ड्रन को यानी सुप्रीम रूह, रूह को बैठकर समझाते हैं उसको कहा जाता है। सो वो तो बैठ करके समझाते हैं, अपना परिचय देते हैं और सृष्टि का चक्कर कैसे फिरता है। वो आते ही तब हैं जबकि यह दुनिया जो पतित है उनको पावन करने, स्थापना करने और विनाश करने। पीछे नई दुनिया की पालना होगी। ये पूरा जैसे अपना है और जिसके लिए हम फेक्शन फैगर्स भेज देते हैं हील स्टेशन। इनसे समझ लो कि हमको पढ़ाने वाला सुप्रीम रूह, जो सभी का बाप है और जो नॉलेजफुल है, वो पढ़ा रहे हैं। उसको स्प्रिच्युअल नॉलेज कहा जाता है। मनुष्यों के ये शास्त्रों के नॉलेज को कोई स्प्रिच्युअल नॉलेज नहीं कहा जाता है। स्प्रिच्युअल तो आत्मा को कहा जाता है और उनका वास्तव में असल स्वधर्म ही है शांत, रहने वाले हैं वहाँ। तो उन बिचारों को कोई को तो नॉलेज, गए तो बहुत हैं यहाँ से ; परन्तु बुद्धि में आवे, न आवे, उनको ही जाकर समझावे। तो बाबा इशारा इसमें भी बता देते हैं और कल वहाँ लिख भी देंगे और अख़बार का भी लिख देंगे कि उन लोगों को चिट्ठी लिखो अच्छी तरह से फट। तुरत दान महापुण्य। वहीं टाइप छपाया, इंटरफॉर्म्स तो रहता ही है। न भी लिखाया, तो ये त्रिमूर्ति लगाए, शिव तो ऊपर में लगाया जाता है। ये स्प्रिचुअल नॉलेज, गॉड फादर शिव है, सो नॉलेज तो देते हैं। वो रूहों को देते हैं, जो रूहें इन ऑरगन्स से सुन रहे हैं। हम सुन रहे हैं, स्प्रिचुअल नॉलेज कैसे देते हैं और खुद देखो, इसमें लिखा हुआ है कि मैं ही इनको नॉलेज देता हूँ। ..... भगवानुवाच। भगवानुवाच माना स्प्रिचुअल गॉड उवाच....क्योंकि इनकारपोरियल को ही भगवान कहा जाता है ना। हर एक को चान्स बहुत मिलती हैं। देखें इनमें भी कोई अमल में लाया होगा। ..... एक रस्क सेक्रेटरी अमेरिका का है और वो भी ...इनको चिट्ठी इसने लिखा है.....जो ये लिखते हैं अभी, इसमें अभी स्प्रिचुअल गॉड फादर सुप्रीम सोल अक्षर ज़रूर लिखना चाहिए और नॉलेजफुल भी अक्षर लिखना चाहिए। फिर वही बातें इसके ऊपर। मीठे–2, सिकीलधे बच्चों प्रति बापदादा का याद–प्यार और गुडनाइट।